मैं हूँ भारत का किसान

डॉ. मनीष कुमार नेमा
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की।

मैं हूँ भारत का किसान, हां मैं हूँ इस देश की पहचान
वैसे मैं हूँ अन्नदाता लेकिन, आज खुद ही हूँ भूख से परेशान।।
कर्ज–माफ़ी हुई हैं, सुना है, पर मैं आज भी हूँ अनजान।
मैं हूँ भारत का किसान, हां मैं हूँ इस देश की पहचान।

बिचौलियों की मार से, सूदखोरों के वार से आज भी हूँ परेशान।।
खून–पसीने से सींची है फ़सलें मैंने, खेत हो या कोई बागान।
मैं हूँ भारत का किसान, हां मैं हूँ इस देश की पहचान।

चिलचिलाती धूप की परवाह ना की मैंने कभी।
कभी मैंने भी सुना था यहाँ पर, जय–जवान जय–किसान।।
मैं हूँ भारत का किसान, हां मैं हूँ इस देश की पहचान।

थोड़ा मुझे भी सुन लो, मेरे मरने से पहले।
वर्ना कहीं भूखा ना मर जाये, मेरा यह देश महान।।
मैं हूँ भारत का किसान, हां मैं हूँ इस देश की पहचान।

समय बदलेगा, नया सवेरा नया प्रकाश लायेगा।
यही अन्नदाता विश्व में, भारत की छवि चमकाएगा।।
हॉ, मैं हूँ इस देश की पहचान, मैं हूं भारत का किसान।

सरलता और शीघ्रता से सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है।

–लोकमान्य तिलक